

JINENDER SONI
Founder, MISSION GYAN

बहुविकल्पी प्रश्न

- वृद्धावस्था में नदी द्वारा किन स्थलाकृतियों का निर्माण किया जाता है-
 (अ) गॉर्ज, U आकार की घाटी (ब) V आकार की घाटी, जलप्रपात
 (स) विसर्प, तटबंध, गोखुर झील (द) क्षिप्रिकाएँ, केनियन
- युवावस्था में नदी किस स्थलाकृति का निर्माण करती है?
 (अ) विसर्प (ब) गोखुर झील
 (स) V आकार की घाटी (द) डेल्टा
- मरुस्थलीय भागों की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आकृति कौन-सी है?
 (अ) वात गर्त (ब) इंसेलबर्ग
 (स) छत्रक शैल (द) बालू टिब्बे
- नदी द्वारा वृद्धावस्था में किन स्थलाकृतियों का निर्माण होता है?
 (अ) विसर्प (ब) क्षिप्रिकाएँ
 (स) जलप्रपात (द) V आकार की घाटी
- नदी मैदानी भागों में सीधी न बहकर टेढ़ी-मेढ़ी बहने लगती है, कहलाती है-
 (अ) केनियन (ब) विसर्प
 (स) डेल्टा (द) जलोढ़ पंख
- निम्न में से किन प्रदेशों में रासायनिक अपक्षय प्रक्रिया यांत्रिक अपक्षय प्रक्रिया की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली होती है?
 (अ) आर्द्र प्रदेश (ब) शुष्क प्रदेश
 (स) हिमनद प्रदेश (द) चूना-पत्थर प्रदेश
- गहरे, लंबे व विस्तृत गर्त या बेसिन जिनके शीर्ष दीवार खड़े ढाल वाले व किनारे खड़े व अवतल होते हैं, उन्हें क्या कहते हैं?
 (अ) सर्क (ब) एस्कर
 (स) घाटी हिमनद (द) पार्श्विक हिमोढ़
- तरंग व धाराओं के अपरदन से निर्मित स्थलरूप कौन-सा है?
 (अ) पुलिन (ब) स्टैक
 (स) रोघिका (द) टिब्बे

9. स्थलरूप विकास की किस अवस्था में अधोमुख कटाव प्रमुख होता है?
- (अ) तरुणावस्था (ब) प्रथम प्रौढ़ावस्था
(स) अंतिम प्रौढ़ावस्था (द) वृद्धावस्था
10. एक गहरी घाटी जिसकी विशेषता सीढ़ीनुमा खड़े ढाल होते हैं; किस नाम से जानी जाती है :
- (अ) U आकार घाटी (ब) अंधी घाटी
(स) गॉर्ज (द) कैनियन

रिक्त स्थान

11. हिमानीकृत घाटियाँ गर्त की भाँति होती है जो आकार में अंग्रेजी के अक्षर _____ जैसी होती है।
12. नवचंद्राकार टिब्बे जिनकी भुजाएँ पवनों की दिशा में निकली होती हैं, _____ कहलाते हैं।

सत्य/असत्य

13. जलोढ़ पंख का निर्माण नदी अपरदन से होता है।
14. भौम जल के अपरदन से धोलरन्ध्र का निर्माण होता है।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

15. समुद्री रोधिकाएँ तूफान और सुनामी लहरों से किस प्रकार बचाव करती हैं?
16. नदियाँ प्रौढ़ावस्था में कौन-कौन सी स्थलाकृतियों का निर्माण करती हैं?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

17. हिमनद घाटियों में कई रैखिक निक्षेपण स्थलरूप मिलते हैं। इनकी अवस्थिति व नाम बताएँ।
18. नदी विसर्प के निर्मित होने के क्या कारण हैं?

निबंधात्मक प्रश्न

19. हिमनद ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों को निम्न पहाड़ियों व मैदानों में कैसे परिवर्तित करते हैं या किस प्रक्रिया से यह कार्य संपन्न होता है, बताएँ?
20. भौम जल अपरदन से बनी स्थलाकृतियों के बारे में व्याख्या करें।

HOTS

21. अपरदन व निक्षेपण के कारक किस प्रकार धरातलीय स्वरूपों में बदलाव लाते हैं व्याख्या करें।



1. (स) विसर्प, तटबंध, गोखुर झील: विसर्प (मोड़) के प्रवेश-स्थल पर मलवे का निक्षेप होते रहने से विसर्प के रूप में स्थित जलीय भाग मुख्य नदी से पृथक् हो जाता है और झील का रूप धारण कर लेता है। इन झीलों को आकृति के अनुसार 'गोखुर झील' कहते हैं। नदियाँ स्वतंत्र रूप से विस्तृत बाढ़ के मैदानों में बहती हुई नदी विसर्प, प्राकृतिक तटबंध, गोखुर झील आदि बनाती हैं। विभाजक विस्तृत तथा समतल होते हैं जिनमें झील, दलदल पाये जाते हैं।
2. (स) युवावस्था में नदी V आकार की घाटी का निर्माण करती है। सर्वप्रथम नदी निम्नवर्ती कटाव द्वारा अपनी तली को गहरा करती हैं। इससे तंग व संकरी "V" आकृति की घाटी विकसित होती हैं।
3. (द) मरुस्थलीय भागों की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आकृति बालू टिब्बे है। मरुस्थलीय भागों में आकर्षक दिखने वाले रेत के टीले या टिब्बे (ड्यून) एक जटिल प्रक्रिया का परिणाम होते हैं।
4. (अ) नदी द्वारा वृद्धावस्था में विसर्प स्थलाकृतियों का निर्माण होता है। नदी विसर्प एक प्रमुख प्रवाही जल (नदी) कृत अपरदनात्मक स्थलरूप हैं। मैदानी क्षेत्रों में नदी की धारा दाएं-बाएं, होते हुए प्रवाहित होती है और विसर्प बनाती है।
5. (ब) नदी मैदानी भागों में सीधी न बहकर टेढ़ी-मेढ़ी बहने लगती है, जो विसर्प कहलाती है। एवं नदी जब पर्वतीय भाग से उतरकर मैदानी भागों में बहती है तो कई स्थलाकृतियों का निर्माण होता है।
6. (द) चूना-पत्थर प्रदेश
7. (अ) सर्क
8. (ब) तरंग व धाराओं के अपरदन से निर्मित स्थलरूप स्टैक है।
9. (अ) तरूणावस्था
10. (स) गॉर्ज
11. U
12. बरखान
13. असत्य
14. सत्य
15. समुद्र के भीतर अचानक जब बड़ी तेज हलचल होने लगती है तो उसमें तूफान उठता है जिससे ऐसी लंबी और बहुत ऊंची लहरों का रेला उठना शुरू हो जाता है जो जबरदस्त सुनामी और तूफान को रोकती है। जिन्हे समुद्री रोधिकाएँ कहते है। रोधिकाएँ तूफान और सुनामी लहरों के आक्रमण के समय सबसे पहले बचाव करती हैं क्योंकि ये इनकी प्रबलता को कम कर देती हैं। इसके बाद रोध, पुलिन स्तूप तथा मैंग्रोव आते हैं, जो इनकी प्रबलता को झेलते हैं।
16. नदियाँ प्रौढ़ावस्था में जलोढ़ पंख, गिरिपद मैदान, बाढ़ का मैदान, विसर्प, तटबंध, गोखुर झील जैसी स्थलाकृतियों का निर्माण करती हैं। प्रायद्वीपीय नदियाँ प्रौढ़ावस्था में हैं तथा इन नदियों की घाटी चौड़ी तथा उथली हुई हैं।

17. हिमनदियों के जमाव व निक्षेपण से अनेक स्थलाकृतियों का निर्माण होता है-

- i. **हिमोढ़-** हिमनद टिल या गोलाशमी मृत्तिका के जमाव के कारण हिमोढ़ का निर्माण होता है। हिमनद के माध्यम से कई तरह के हिमोढ़ों का निर्माण होता है, जैसे- (क) अंतस्थ हिमोढ़ (ख) पार्श्विक हिमोढ़ (ग) मध्यस्थ हिमोढ़।
- ii. **हिमानी धौत मैदान-** हिमानी जलोढ़ निक्षेपों से हिमानी धौत मैदान निर्मित होते हैं।
- iii. **एस्कर-** हिमनद के पिघलने से बनी नदियाँ नदी घाटी के ऊपर बर्फ के किनारों वाले तल में प्रवाहित होती हैं। यह जलधारा अपने साथ बड़े गोलाशम, चट्टानी टुकड़े तथा छोटा चट्टानी मलबा बहाकर लाती हैं जो हिमनद के नीचे इस बर्फ की घाटी में जमा हो जाते हैं। ये बर्फ पिघलने के पश्चात एक वक्राकार कटक के रूप में मिलते हैं, जिन्हें एस्कर कहते हैं।
- iv. **ड्रमलिन-** ड्रमलिन का निर्माण हिमनद दरारों में भारी चट्टानी मलबे के भरने व उसके बर्फ के नीचे रहने से होता है।

18. नदी विसर्प एक प्रमुख प्रवाही जल (नदी) कृत अपरदनात्मक स्थलरूप हैं। मैदानी क्षेत्रों में नदी की धारा दाएं-बाएं, होते हुए प्रवाहित होती है और विसर्प बनाती है। ये विसर्प 'एस' आकार की होती है। नदियों का ऐसा घूमना अधिक अवसादी बोझ के कारण होता है।

नदी विसर्प के निर्मित होने के कारण निम्नलिखित हैं-

- i. मंद ढाल पर बहते जल में तटों पर क्षैतिज या पार्श्विक कटाव करने की प्रवृत्ति का होना।
- ii. तटों पर जलोढ़ का अनियमित व असंगठित जमाव, जिससे जल के दबाव का नदी पार्श्वों पर बढ़ना।
- iii. प्रवाहित जल का कोरिआलिस प्रभाव से विक्षेपण, ठीक उसी प्रकार जैसे कोरिआलिस बल से वायु प्रवाह विक्षेपित होता है।

19. हिमनद प्रवाह बहुत धीमा होता है। यह प्रतिदिन कुछ सेंटीमीटर या इससे कम से लेकर कुछ मीटर तक प्रवाहित हो सकते हैं। हिमनद मुख्यतः गुरुत्वबल की वजह से गतिमान होते हैं। हिमनदों से प्रबल अपरदन होता है, जिसका कारण इसके अपने भार से उत्पन्न घर्षण है। हिमनद द्वारा घर्षित चट्टानी पदार्थ इसके तल में ही इसके साथ घसीटे जाते हैं या घाटी के किनारों पर अपघर्षण व घर्षण द्वारा ज़्यादा अपरदन करते हैं। हिमनद, अपक्षयरहित चट्टानों का बहुत ज़्यादा अपरदन करते हैं, जिससे ऊँचे पर्वत छोटी पहाड़ियों तथा मैदानों में बदल जाते हैं।

हिमनद के निरंतर संचालित होने से हिमनद का मलबा हटता रहता है, जिससे विभाजक नीचे जाता है और कालांतर में ढाल इतने निम्न हो जाते हैं कि हिमनद की संचलन शक्ति समाप्त हो जाती है तथा निम्न पहाड़ियों व अन्य निक्षेपित स्थलरूपों वाला एक हिमानी धौत रह जाता है।

20. भौम जल अपरदन से बनी स्थलाकृतियाँ निम्न हैं-

- i. **घोल रंध्र-** चूना पत्थर प्रदेश में वर्षा का जल शैल संधियों में प्रविष्ट होकर घुलनशील तत्वों को घोलकर शैलों से अलग कर लेता है। जिससे पृष्ठ पर असंख्य छोटे - छोटे छिद्र, बन जाते हैं। जिन्हें घोल रन्ध्र कहते हैं। तथा इनकी गहराई आधा मीटर से 30 मीटर या उससे अधिक होती है। जल की घुलन क्रिया के कारण चूने की शैलों में बनी दरारों के बड़े होने से घोल रंध्र बनते हैं।
- ii. **विलय रंध्र-** यह प्रक्रिया कई वर्षों तक निरंतर चलती रहने से, ये रंध्र बड़े बन जाते हैं। उन्हें विलय रंध्र कहते हैं। भूपृष्ठ पर बहनेवाले जल का इन रंध्रों में बह जाने से वे सहसा लुप्त हो जाते हैं और बड़ी दूरी पर पुनः भूपृष्ठ पर दिखाई देते हैं।
- iii. **बड़े छिद्र ध्वस्त या निपात रंध्र-** घोल रंध्रों के नीचे बनी कंदराओं की छत ध्वस्त हो जाए तो ये बड़े छिद्र ध्वस्त या निपात रंध्र या डोलाइन के नाम से जाने जाते हैं।

iv. **घाटी रंध्र या युवाला-** जब कई डोलाइन कंदराओं की छत के गिरने से या पदार्थों के स्खलन द्वारा आपस में मिल जाते हैं तो लंबी तंग या विस्तृत खाइयाँ बनती हैं, जिन्हें घाटी रंध्र या युवाला कहते हैं।

v. **लेपीस-** धीरे-धीरे चूनायुक्त चट्टानों के अधिकतर भाग इन गर्तों व खाइयों के हवाले हो जाता है और पूरे क्षेत्र में अत्यधिक अनियमित पतले व नुकीले कटक आदि रह जाते हैं, जिन्हें लेपीस कहते हैं।

vi. **कंदराएँ-** पानी दरारों व संधियों से रिसकर शैल संस्तरण के साथ क्षैतिज अवस्था में बहता है। इसी तल संस्तरण के सहारे चूना चट्टानें घुलती हैं और लंबे एवं तंग विस्तृत रिक्त स्थान बनते हैं, जिन्हें कंदराएँ कहा जाता है।

21. अपरदन व निक्षेपण के कारक निम्नलिखित प्रकार से धरातलीय स्वरूपों में बदलाव लाते हैं :-

1. अपरदन व निक्षेपण के कारक नदी, पवन, भूमिगत जल, तरंगों, हिमनदी धरातलीय स्वरूपों में बदलाव करते हैं।
2. नदियों द्वारा लाए गए अवसादों से समतल मैदानों का निर्माण होता है।
3. कन्दराओं तथा गुफाओं का निर्माण चूना प्रदेशों में भूमिगत जल से होता है।
4. समुद्री निक्षेपण के कारण लैगून का निर्माण होता है।
5. पर्वतीय भागों के आगे नदियों द्वारा मलबे के जमाव से मंद ढाल वाले मैदान का निर्माण होता है, जिसे बजाडा कहते हैं।
6. इसके अतिरिक्त कई धरातलीय स्वरूप क्रमण के कारकों से निर्मित होते हैं।

पढ़ें: जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES